Toppersnotes®
Unleash the topper in you

SET

State Eligibility Test

राज्य पात्रता परीक्षा

हिन्दी साहित्य

पेपर – 2 II भाग – 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

इकाई - 2

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास 1-162

- हिन्दी उपन्यास
- हिन्दी कहानी
- हिन्दी नाटक
- हिन्दी निबंध
- हिन्दी आलोचना
- हिन्दी की अन्य गद्य विधाएँ
- हिन्दी का प्रवासी साहित्य

इकाई - 3

भारतीय काव्यशास्त्र 163-207

- काव्य के लक्षण
- प्रमुख संप्रदाय और सिद्धान्त
- रस निष्पत्ति
- प्लेटो के काव्य सिद्धान्त
- वर्ड्सवर्थ
- कॉलरिज
- टी.एस.इलिएट
- आई.ए.रिचर्ड्स : मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब

इकाई - 4

वैचारिक पृष्ठभूमि 208-226

- भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण
- महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण
- गांधीवादी दर्शन
- अम्बेडकर दर्शन
- लोहिया दर्शन
- मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, अस्मितामूलक विमर्श (दलित, स्त्री, आदिवासी एवं अल्पसंख्यक)

हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

साहित्य का विभाजन– सम्पूर्ण साहित्य जगत में प्राप्त होने वाली रचनाओं को निम्नानुसार विभाजित किया गया है–

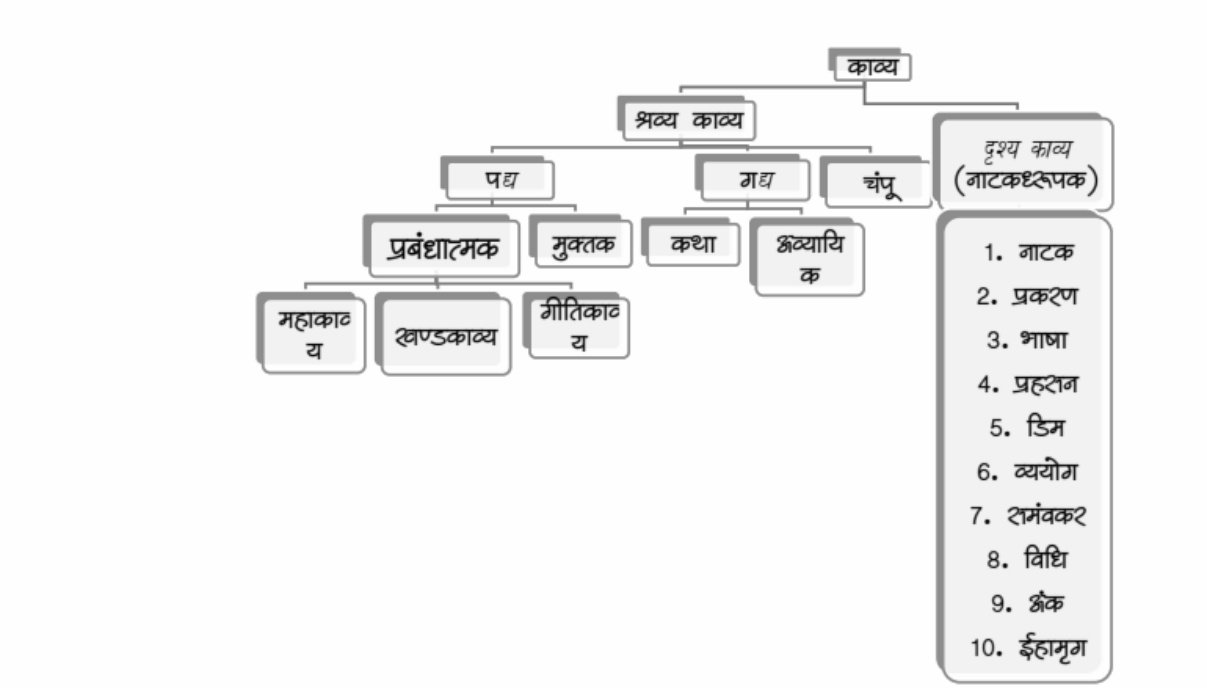

'गद्य' शब्द की व्युत्पति एवं अर्थ

गद्य शब्द 'गद्' धातु में 'य (भत)' प्रत्यय के जुडने से बना है । इसका शाब्दिक अर्थ होता है, 'मौलिक अभिव्यक्ति' अर्थात् किसी भी व्यक्ति के द्वारा अपने में उत्पन्न होने वाले विचारों को मूल रूप में लिख देना ही गद्य काव्य कहलाता है ।

गद्य की परिभाषा– आचार्य दण्डी की स्वरचित काव्यदर्श रचना में गद्य की परिभाषा के लिए निम्नलिखित दो कथन है–

i. ''आपाद पदसन्तानो गद्यः'' अर्थात् छेद के नियमों से रहित पद रचना गद्य कहलाती है ।
ii. ''ओजः समासभूमस्तमेतद् गद्यस्य लक्षणम्'' अर्थात् जिस रचना में ओज गुण की प्रधानता होती है तथा सामासिक पदों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है, वह गद्य रचना कहलाती है ।

नोट–

i. संसार के सभी साहित्यों में सर्वप्रथम पद्य काव्य ही लिखा गया है एवं उसके सफल होने के बाद ही गद्य काव्य लिखा जाता है ।
ii. ''गद्य कविनां निकंष वदन्ति'' अर्थात् 8वीं शताब्दी में कहे गए आचार्य वामन के इस कथन के अनुसार गद्य काव्य को कवियों की कसौटी कहा गया है ।

गद्य काव्य के भेद

संस्कृत आचार्यों के अनुसार गद्य काव्य के प्रमुखतः दो भेद माने गए हैं यथा–

i. कथा– कवि की कल्पना के आधार पर रचित गद्य काव्य रचना ।
ii. आख्यायिक– ऐतिहासिक कथानकों के अधार पर रचित गद्य काव्य रचना ।

सामासिक पदों के प्रयोग के आधार पर गद्य काव्य के चार भेद माने गए हैं–

i. मुक्तक गद्य– सामासिक पदों से रहित गद्य काव्य रचना ।
ii. चूर्णक गद्य– सामासिक पदों का अल्प मात्रा में प्रयोग ।
iii. उत्कालिका प्रायः गद्य– सामासिक पदों का अधिक मात्रा में प्रयोग ।
iv. वृत्तगंधि गद्य– गद्य की भी पद्य की तरह लिखने का प्रयास ।

हिन्दी साहित्य में गद्य काव्य के भेदों को विधा के नाम से जाना जाता है तथा हिन्दी गद्य साहित्य में अब तक निम्नलिखित 17 विधाएं विकसित हुई हैं–

i. निबन्ध
ii. आलोचनाध्समालोचना
iii. उपन्यास
iv. कहानी
v. नाटक
vi. एकांकी
vii. आत्मकथा
viii. जीवनी
ix. रेखाचित्र
x. संस्मरण
xi. मात्रावृत्त
xii. रिपोर्ताज
xiii. पत्र
xiv. डायरी
xv. फीचर
xvi. साक्षात्कार
xvii. संदर्भ ग्रन्थ/स्मृति ग्रन्थ

नोट– प्रेस (छापेखाने) के अविष्कार के बाद हिन्दी गद्य साहित्य में सर्वप्रथम 'निबन्ध' विधा विकसित हुई मानी जाती है ।

हिन्दी गद्य साहित्य का काल विभाजन

शुक्ल जी के द्वारा सम्पूर्ण गद्य साहित्य को निम्नानुसार चार खण्डों में विभाजित किया गया है–

1. अभ्युत्थान काल (भारतेन्दु युग)– (1900 वि. से 1950 वि.)(1843 ई. से 1893 ई.)
2. परिष्कार काल (द्विवेदी युग)– (1950 वि. से 1975 वि.)(1893 ई. से 1918 ई.)
3. उत्कर्ष काल (छायावादी युग)– (1975 वि. से 1995 वि.)(1918ई. से 1938 ई.)
4. वर्तमान काल (अद्यतन काल)– (1995 वि. से अब तक)(1938 ई. से अब तक)

उपन्यास

उपन्यास शब्द की उत्पति एवं अर्थ–

उपन्यास शब्द की व्युत्पति के संबंध में निम्नानुसार दो मत प्राप्त होते है–

प्रथम मत

इस मत के अनुसार उपन्यास शब्द उप . न्यास के भाग से बना है । यहां उप का अर्थ होता है, 'समीप' तथा 'न्यास' का अर्थ होता है 'धरोहर' अर्थात् हमारे पास में रखी हुई वस्तु ही उपन्यास कहलाती है ।

द्वितीय मत

इस मत के अनुसार भी उपन्यास उप . न्यास के भाग से बना है, यहां उप का अर्थ होता है 'सामने' तथा 'न्यास' का अर्थ होता है 'स्थापना' अर्थात् हमारे सामने ही किसी विषय वस्तु को स्थापित करनाही उपन्यास कहलाता है ।

उपन्यास की परिभाषाएं

1. मुंशी प्रेमचंद के अनुसार– ''मानव जीवन पर प्रकाश डालना एवं उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास कहलाता है ।''
   मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव चरित्र का आख्यान भी कहा है ।
2. बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार– ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है ।''
3. डॉ. गणपति चंद्र गुप्त के अनुसार– ''उपन्यास गद्य का एक नवविकसित रूप है, जिसमें कथावस्तु, चरित्र –चित्रण, संवाद इत्यादि तत्वों के माध्यम से यथार्थ एवं कल्पना का मिश्रित रूप के द्वारा किसी कहानी को आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है ।''
4. 'क्रोस' के अनुसार– ''उपन्यास से अभिप्राय : उस गद्यमय अल्प कथा से है, जिसमें मानव जीवन के यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया जाता है ।''

सारांश– उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'मानवीय मनोवेगों का ऐसा चित्रण, जिसमें कल्पना एवं यथार्थ का सुन्दर वर्णन यिका जाता है, उसे ही उपन्यास कहते है ।'

उपन्यास की प्रमुख विशेषताएं

1. उपन्यास हिन्दी गद्य काव्य की एक नवविकसित विधा है ।
2. इसमें किसी मानव के जीवन का सर्वांग विवेचन किया जाता है ।
3. उपन्यास में कल्पना एवं यथार्थ का सुन्दर मिश्रण किया जाता है ।
4. उपन्यास में मुख्य कथा के साथ-साथ कुछ सहायक प्रासंगिक कथाओं को भी शामिल कर दिया जाता है ।

उपन्यास के प्रमुख तत्व

उपन्यास एवं कहानी विधा में प्रमुखतः निम्नलिखित 06 तत्व पाए जाते हैं-

1. कथानक या विषय वस्तु
2. पात्र एवं चरित्र चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. भाषा शैली
5. देश काल वातावरण
6. उद्देश्य

हिन्दी साहित्य को सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ला डॉ. नगेन्द्रद्डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार परीक्षागुरु- 1882 ई.लेखक लाला श्रीनिवास दास
2. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार- भाग्यवती- 1877 ई. लेखक- श्रद्धाराम फुल्लौरी
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- पूर्ण प्रकाश चन्द्र, प्रभा- 1880 ई., लेखक- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
4. श्रीकृष्णलाल के अनुसार- चन्द्रकान्ता- 1891 ई., लेखक- देवकीनन्दन खत्री
5. डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार- रानी केतकी की कहानी- 1803 ई., लेखक- सैयद इंशा अल्ला खां
6. डॉ. गोपालराय के अनुसार- देवरानी-जेठानी की कहानी- 1870 ई., लेखक- पं. गौरीदत्त
   सर्वमान्यतानुसार- परीक्षागुरु

उपन्यास करे संबंधित अन्य विशेष तथ्य

1. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास-
   हृदयहारिणी या आदर्शरमिणी- 1890 ई., लेखक- किशोरीलाल

2. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम राजनीतिक उपन्यास-
   प्रेमाश्रम प्रेमाश्रेय- 1922 ई., लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

3. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम जीवन चरित्रात्मक उपन्यास-
   झांसी की रानी- 1946 ई., लेखक- वृंदावन लाल वर्मा

4. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम आख्यायिक शैली का उपन्यास–
   श्यामा स्वप्न– 1885 ई., लेखक– ठाकुर जगमोहन
5. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम पत्रात्मक शैली का उपन्यास–
   चंद हसीनों के खतत्– 1927 ई., लेखक– पाण्डेय बेचन शर्मा

6. हिन्दी साहित्य में स्मृति शैली का सर्वप्रथम उपन्यास–
   देहाती दुनिया– 1926 ई., लेखक– शिवपूजन सहाय

7. हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम आंचलिक उपन्यास–
   मैला आंचल–1954 ई.त्र लेखक– फणीश्वरनाथ रेणू

8. हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों के जन्मदाता– किशोरी लाल गोस्वामी
9. हिन्दी साहित्य में तिलस्मी उपन्यासों के जन्मदाता– देवकीनंदन खत्री
10. हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यासों के जन्मदाता– गोपालराय गहमरी
11. हिन्दी उपन्यास का घासलेटी साहित्य– पाण्डेय बचन शर्मा 'उग्र' के द्वारा रचित उपन्यास मानव मन पर तुरन्त अपना प्रभाव छोड देते हैं, जिसके कारण बनारसी दास चतुर्वेदी ने उग्र के द्वारा रचित उपन्यासों को घासलेटी साहित्य कहकर पुकारा है ।

हिन्दी उपन्यास का काल विभाजन

हिन्दी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद सर्वप्रथम श्रेष्ठ उपन्यासकार हुए हैं, अतः इनको केन्द्र बिन्दु में मानकर हिन्दी उपन्यास को निम्नानुसार तीन कालखण्डों में विभाजित किया गया है–

1. प्रेमचंद पूर्व युगीन हिन्दी उपन्यास– 1918 ई. से पूर्व रचित उपन्यास
2. प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास– 1918 ई. से 1938 ई.
3. प्रेमचंदोतर युगीन हिन्दी उपन्यास– 1938 ई. से अब तक ।

प्रेमचंद पूर्व युगीन उपन्यास

बालकृष्ण भट्ट

1. नूतन ब्रह्मचारी– 1886 ई.
2. सौ अजान एक सुजान– 1892 ई.
3. रहस्य कथा– 1879 ई.

विशेष तथ्य

- इनका रहस्य कथा उपन्यास केवल डॉ. नगेन्द्र के अनुसार ही माना गया है, शेष उपन्यासाकारों ने इनके दो ही उपन्यास स्वीकार किए है ।
- इनके शेष दोनों उपन्यास विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से लिखे गए है ।

- 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास में 'विनायक' नामक नायक एक डाकू की भूमिका में दर्शाया गया है, जिसका हृदय परिवर्तन करके अन्त में उसे सज्जन पुरुष के रूप में दर्शाया गया है ।
- 'सौ अजान एक सुजान' उपन्यास में सत्संग के प्रभाव से एक बिगडे हुए सेठ को सुधारा गया है ।

जगमोहन ठाकुर जगन्नमोहन

श्यामा स्वप्न– 1885 ई.

विशेष तथ्य

- यह हिन्दी साहित्य में आख्यायिका शैली का सर्वप्रथम उपन्यास माना जाता है ।
- इस उपन्यास में एक क्षत्रिय बालक का श्याम सुन्दर एवं एक ब्राह्मण बालिका श्यामा की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है ।

मेहता लज्जाराम शर्मा

1. धूर्त रसिकलाल– 1890 ई.
2. स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी– 1899 ई.
3. आदर्श दम्पती– 1904 ई.
4. बिगडे का सुधार या सती सुखदेवी– 1907 ई.
5. आदर्श हिन्दू– 1914 ई.

विशेष तथ्य

- इनके उपन्यासों में भारतीय हिन्दू संस्कृति की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है ।
- आदर्श हिन्दू इनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है, इस उपन्यास में इन्होंने हिन्दी संस्कृति के आदर्श गृहस्थ जीवन का वर्णन किया है ।

लाला श्रीनिवासदास

परीक्षागुरु – 1882 ई.

विशेष तथ्य

यह हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में एक सेठ पुत्र 'मनमोहन' की कथा का वर्णन किया गया है । यह अपनी युवावस्थामें चुन्नीलाल और शम्भूलाल नामक मित्रों की कुसंगति से प्रभावित होकर बिगड जाता है, परन्तु अंत में ब्रजकिशोर नामक मित्र की सहायता से पुनः सही रास्ते पर आ जाता है ।

राधाकृष्ण दास

निस्सहाय हिन्दू– 1890 ई.

विशेष तथ्य

गोवध पर आधारित इस उपन्यास में इन्होंने मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता एवं हिन्दुओं की निःसहायता का वर्णन किया है ।

बाबू देवनीनंदन खत्री (1861 ई. से 1913 ई. तक)

1. चन्द्रकान्ता– 1891 ई.
2. नरेन्द्र मोहिनी– 1893 ई.
3. वीरेन्द्र वीर– 1895 ई.
4. कटोरे भरा खून– 1895 ई.
5. चन्द्रकान्ता सन्तति– 1896 ई.
6. कुसुम कुमारी– 1899 ई.
7. भूतनाथ– 1906 ई.
8. काजर की कोठरी– 1902 ई.
9. गुप्त गोदना–
10. अनूठी बेगम

विशेष तथ्य

- ये भी हिन्दी साहित्य के तिलस्मी–अय्यारी उपन्यासों के जन्मदाता माने जाते हैं ।
- इनके द्वारा रचित चन्द्रकान्ता एवं चन्द्रकान्ता संतति जैसे उपन्यासों को पढने के लिए अनेक उर्दूभाषी लोगों ने हिन्दी लिखने का प्रयास किया है ।
- चन्द्रकान्ता उपन्यास इनका सर्वप्रथम एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में इन्होंने विजयगढ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता की कथा का वर्णन किया है ।
- चद्रकान्ता संतति इनका दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास है । यह उपन्यास 1896 ई. से 1905 ई. के मध्य कुल 24 भागों मं प्रकाशित हुआ था, परन्तु उनमें से शुरूआती छह भाग देवकीनंदन खत्री के द्वारा लिखे गए थे ।

देवकीनंदन खत्री द्वारा निम्नलिखित चार अन्य उपन्यास भी लिखे गए हैं–

1. रक्त मंडल
2. मृत्यु किरण
3. सफेद शैतान
4. अद्भुत भूत

किशोरी लाल गोस्वामी (1865 से 1932 ई. तक)

1. हृदयहारिणी या आदर्श रमणी- 1890 ई.
2. लवंगलता- 1890 ई.
3. त्रिवेणी या सौभाग्यवती- 1890 ई.
4. लीलावती या आदर्श सती- 1901 ई.
5. ताराबाई या क्षत्रिय कुमारी- 1902 ई.
6. कनक कुसुम- या मस्तानी- 1903 ई.
7. सुल्ताना रजिया बेगम या रंगमहल में हलाहल- 1904 ई.
8. मल्लिका देवी या बंग सरोजिनी- 1905 ई.
9. पन्नाबाई- 1909 ई.
10. लखनऊ की कब्र सर यरस्ही महलसरा- 1917 ई.

विशेष तथ्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी साहित्य में इन्होंने कुल 65 उपन्यास लिखे हैं, इनको हिदी उपन्यासों का जन्मदाता भी माना जाता है ।
- इनके द्वारा रचित हृदयहारिणी य आदर्श रमणी उपन्यास हिन्दी साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास माना जाता है । यह उपन्यास सर्वप्रथम 1890 ई. में हिन्दुस्तान नामक पत्रिका में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुआ था । एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन 1904 ई. हुआ था ।
- अपनी उपन्यासों के प्रकाशन के लिए इन्होंने 'उपन्यास' नामक एक पत्रिका का सम्पादन भी किया था।

गोपाराम गहमरी

1. अद्‌भुत लाश
2. गुप्तचर
3. सरकटी लाश
4. जासूस की भूल
5. बेकसूर को फांसी
6. बेगुनाह का खून
7. जासूस पर जासूसी
8. जासूस चक्कर में
9. इन्द्रजालिक जासूस
10. जाससू की अय्यारी
11. देवरानी-जेठानी

विशेष तथ्य

1. ये हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यासों के जन्मदाता भी माने जाते हैं ।
2. इनके उपन्यासों पर अंग्रेजी साहित्य के उपन्यासकार 'आर्चर कानन डायल' के उपन्यासों का प्रभाव दिखाई पडता है ।
3. अपने उपन्यासों के प्रकाशन के लिए इन्होंने 'जासूस' नामक एक पत्रिका का सम्पादन भी किया था।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1. ठेठ हिन्दी का ठाठ
2. अधखिले फूल
3. वेनिस का बांका

विशेष तथ्य

ठेठ हिन्दी का ठाठ इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास है, इस उपन्यास में इन्होंने अनमेल विवाह से होने वाले दुष्परिणामों का वर्णन किया है ।

अम्बिका दत्त व्यास

आश्चर्य वृत्तान्त

राधिकारमण प्रसाद सिंह

1. प्रेम लहरीध्नवजीवन
2. राम-रहीम

प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास (1918 ई.से 1938 ई. तक)

मुन्शी प्रेमचन्द (1880 ई.से 1836 ई. तक)

जन्मस्थान- ग्राम- लमही (उ.प्र)

सेवा सदन- 1918 ई.

- यह प्रेमचन्द जी का प्रथम उपन्यास माना जाता है ।
- यह उपन्यास आरम्भ में 'बाजार-ए-हुस्न' के नाम से उर्दू भाषा में लिखा गया था ।
- इस उपन्यास में इन्होने वैवाहिक समस्याओं का चित्रण किया है ।
- स्वयं प्रेमचंद ने इस उपन्यास को भी हिन्दी का बेहतरीन नावेल कहकर पुकारा है ।

प्रेमाश्रय या प्रेमश्रय (1922 ई.)

i. यह उपन्यास भी प्रारम्भ में 'गोश-ए-आफियत' नाम से उर्दू भाषा में लिखा गया था ।
ii. इस उपन्यास मं कृषक जीवन की समस्याओं का वर्णन किया गया है ।
iii. यह हिन्दी साहित्य का प्रथम उपन्यास भी माना जाता है ।

रंग-भूमि (1925 ई.)

- यह उपन्यास आरम्भ में 'चौगान-ए-हस्ती' नाम से उर्दू भाषा में लिखा गया था ।

- इस उपन्यास में शासक वर्ग या अधिकारियों के द्वारा दलितों पर किए जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया गया है ।
- एक अन्धे एवं दलित 'सूरदास' को इस उपन्यास का नायक बनाया गया है ।
- प्रेमचन्द ने सर्वप्रथम इसी उपन्यास में एक दलित व्यक्ति को नायक बनाया ।

कायाकल्प– 1926 ई.

- यह मुंशी प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी में रचित प्रथम उपन्यास माना जाता है ।
- इस उपन्यास में इन्होंने ढोंगी बाबाओं के धार्मिक कुवृत्तियों का चित्रण किया है ।

निर्मला– 1927 ई.

इस उपन्यास में इन्होंने अनमेल विवाह एवं दहेज प्रथा की समस्या का चित्रण किया है ।

गबन– 1933 ई.

- इस उपन्यास में इन्होंने आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवारों की आर्थिक समस्याओं एवं आभूषण लालसा का चित्रण किया है ।
- रमानाथ (नायक) व जालपा (नायिका) इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है ।

कर्मभूमि– 1933 ई.

इस उपन्यास में इन्होंने वर्तमान समाज में हरिजनों की स्थिति एवं उनकी समस्याओं को उजागर किया है।

गोदान– 1935 ई.

- यह मुंशी प्रेमचन्द का अन्तिम प्रकाशित एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है ।
- इस उपन्यास में इन्होंने मजदूर तथा किसान वर्ग की समस्याओं का चित्रण किया है ।
- डॉ. नगेन्द्र ने इस उपन्यास को ग्रमीण जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य कहकर पुकारा है ।
- मालती, मेहता, धनिया, होरी, गोबर इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है ।

मंगलसूत्र

यह मुंशी प्रेमचन्द को अधूरा उपन्यास माना जाता है, आगे चलकर उनके पुत्र अमृतराय ने इसे पूर्ण करके 1948 ई. में प्रकाशित करवाया था ।

अन्य उपन्यास

1. प्रेम या दो सखियों का विवाह
2. जलवा-ए-इसआर या वरदान– 1921 ई.
3. रूठी रानी
4. किसना
5. असरारे– मआबिद या देवस्थान रहस्य

अन्य विशेष तथ्य

- मुंशी प्रेमचन्द का वास्तविक नाम 'धनपत राय' था
- ये आरम्भ में 'नवाब राय' के नाम से उर्दू भाषा में लिखा करते थे ।
- 1907 ई. में अंग्रेज सरकार द्वारा इनके 'सोजे वतन' कहानी संग्रह को जब्त कर लिया गया था एवं आगे से इनके लेखन कार्य पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया था ।
- यह प्रतिबन्ध लगने के बाद इन्होंने मुंशी दयानारायण निगम के सुझाव पर अपना नाम बदलकर प्रेमचंद रख लिया था ।
- हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार शरतचन्द्र चटर्जी ने इनको उपन्यास सम्राट कहकर पुकारा है ।
- शुक्ल जी के अनुसार इनको हिन्दी गद्य साहित्य का युग प्रवर्तक भी माना गया है ।
- इनके पुत्र अमृतराय ने इनके जीवन पर 'कलम का सिपाही' नाम से इनकी 'जीवनी' लिखकर इनको कलम का सिपाही नाम प्रदान किया था ।
- मदनगोपाल नामक विद्वान ने 'कलम का मजदूर' नामक जीवनी लिखकर इनको कलम का मजदूर नाम प्रदान किया था ।
- डॉ. रामविलास शर्मा ने इनको कबीर के बाद दूसरा बडा व्यंग्यकार कहकर पुकारा है ।

इन्होंने निम्नलिखित पत्र- पत्रिकाओं में सम्पादन का कार्य भी किया था-

1. हंस
2. जागरण
3. माधुरी
4. मर्यादा

ये हिन्दी साहित्य में 'आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यासकार' माने जाते हैं ।

जयशंकर प्रसाद

1. कंकाल- 1929 ई.
2. तितली- 1934 ई.
3. इरावती- अधूरा उपन्यास

विशेष तथ्य

1. इनके द्वारा रचित उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का अधिक चित्रण किया गया है ।
2. इनके 'कंकाल' उपन्यास में भी सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण किया गया है । यह उपन्यास भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रचित 'प्रेम योगिनी' नाटक के कथानक पर आधारित उपन्यास माना जाता है ।
3. 'तितली' इनका आदर्शपरक उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में सामन्ती व्यवस्था एवं जमींदारी प्रथा से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया गया है ।

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

1. मां– 1929 ई.
2. भिखारिणी– 1929 ई.
3. संघर्ष– 1945 ई.

विशेष तथ्य

1. इनके उपन्यासों में नारी के आदर्श चरित्र को प्रमुखता से उभारा गया है ।
2. इनके उपन्यासों पर महावीर प्रसाद द्विवेदी की रचना शैली का प्रभाव दिखाई पडता है ।
3. ये हिन्दी साहित्य में रसिक एवं मनमौजी स्वभाव वाले रचनाकार भी माने गए हैं ।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

1. हृदय की परख
2. हृदय की प्यास
3. अमर अभिलाषा
4. आत्मदाह
5. मन्दिर की नर्तकी
6. रक्त की प्यास
7. वैशाली की नगर वधू– 1948 ई.
8. सोमनाथ
9. आलमगीर
10. वयम् रक्षाम्
11. सोना और खून
12. सत्याद्रि की चट्टानें

विशेष तथ्य

1. हिन्दी साहित्य में इन्होंने लगभग तीन दर्जन उपन्यास लिखे हैं ।
2. 'वैशाली की नगर वधू' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में इन्होंने व्यक्ति स्वातंत्रय की समस्या का चित्रण किया है ।
3. इनके अन्य उपन्यासों मं भी दुराचार, अभिचार, अत्याचार, अनैतिकता इत्यादि से संबंधित सामाजिम बुराइयों का चित्रण किया गया है ।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

1. घण्टा
2. चन्द्र हसीनों के खतूत
3. दिल्ली का दलाल
4. बुधुआ की बेटी
5. शराबी
6. सरकार तुम्हारी आंखों में
7. जी, जी, जी
8. कला का पुरस्कार
9. मनुष्यानन्द

10. कढी में कोयला
11. फागुन के दिन चार

विशेष तथ्य

1. इनके उपन्यासों मं दलित या पतित वर्ग की समस्याओं का चित्रण किया गया है ।
2. इनके द्वारा रचित उपन्यास मानव पर तुरन्त अपना प्रभाव डाल देते हैं, जिसके कारण बनारसीदास चतुर्वेदी ने इनके उपन्यासों को 'घासलेटी साहित्य' कहकर पुकारा है ।
3. इनके द्वारा 'मतवाला', 'वीणा', 'स्वराज', 'स्वदेश', 'विक्रम संग्राम', 'रूपाभ' इत्यादि का सम्पादन किया और उप संपादक भी रहे ।
4. इनको 'उग्र', 'उग' एवं 'ओजस्वी' भाषा शैली के कारण इनको उल्कापात, घूमकेतु, तूफान, बवण्डर, उग्र इत्यादि नामों से पुकारा जाता है ।

वृंदावन लाल वर्मा

1. संगम
2. लगन
3. प्रत्यागत
4. कुण्डली चक्र
5. गढ कुण्डार
6. विराटा की पद्मिनी
7. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई
8. मुसाहिब-जू
9. कचनार
10. मृगनयनी (1950 ई.)
11. सत्रह सौ उन्नीस- माधव जी सिन्धिया
12. टूटे कांटे
13. अमर बेल
14. अचल मेरा कोई
15. राखी की लाज

विशेष तथ्य

1. 'मृगनयनी' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है । इस उपन्यास में इन्होंने राजा और प्रजा, सौन्दर्य और संयम युद्ध और प्रेम, राजनीति और संस्कृति, इतिहास और कल्पना इत्यादि द्वंद्वों का प्रमुखता से चित्रण किया है ।
2. मानसिंह, मृगनयनी, लाखी, अटल अत्यादि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है ।
3. डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार इनके गढ कुण्डार (1927 ई.) उपन्यास को हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास माना गया है ।
4. हिन्दी साहित्य जगत में इनके 'बुन्देलखण्ड' का 'चन्द्रबरदायी' नाम से भी पुकारा जाता है ।

शिवपूजन सहाय

देहाती दुनिया- (1926 ई.)

विशेष अन्य

यह हिन्दी साहित्य में स्मृति में रचित प्रथम उपन्यास माना जाता है । कुछ समीक्षकों के अनुसार इस उपन्यास को हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास भी माना गया है ।

राहुल सांकृत्यायन

1. शैतान की आंख
2. विस्मृति के गर्भ में
3. सोने की ढाल
4. जीने के लिए
5. सिंह सेनापति
6. जय यौद्धाय
7. मधुर स्वप्न
8. विस्मृत यात्री
9. जादू का मुल्क

विशेष तथ्य

1. इनका वास्तविक नाम केदार पाण्डेय था ।
2. 1929.30 ई. में इन्होंने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था । उसके बाद इन्होंने अपना नाम बदलकर राहुल सांकृत्यायन रख लिया था ।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव

1. विदा
2. विजय
3. विकास
4. बेकसी की मजार
5. विश्वास की वेदी पर
6. विनाश के बादल

विशेष तथ्य

1. 'बेकसी की मजार' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है ।
2. ऐतिहासिक श्रेणी के इस उपन्यास में इन्होंने पाश्चात्य सभ्यता की अन्धानुकरण पर कटाक्ष किया है ।

प्रेमचन्दोतर युगीन उपन्यास

1938 ई. के पश्चात रचित उपन्यासों को इस युग में शामिल किया जाता है । विषय वस्तु के आधार पर इस युग के उपन्यासों को पुनः निम्नानुसार 5 श्रेणियों में विभाजित किया गया है–

1. मनोविश्लेषणवादी उपन्यास
2. साम्यवादीद प्रगतिवादी उपन्यास
3. आंचलिक उपन्यास
4. ऐतिहासिक उपन्यास
5. प्रयोगवादी या आधुनिकता बौद्धवादी उपन्यास

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

प्रेमचन्दोतर युग के जिन उपन्यासों में यौन वासनाओं एवं यौन समस्याओं का प्रमुखता से चित्रण किया गया है । वे इस श्रेणी के उपन्यासों में शामिल किए जाते है ।

इस श्रेणी में प्रमुखता निम्न उपन्यासकार प्रसिद्ध हुए है–

1. जैनेन्द्र– 1905–1988 ई.
2. सुनीता– 1935 ई.
3. त्यागपत्र– 1937 ई.
4. कल्याणी– 1939 ई.
5. सुखदा– 1952 ई.
6. विवर्त– 1953 ई.
7. व्यतीत– 1953 ई.
8. जयवर्धन– 1956 ई.
9. मुक्तिबोध– 1965 ई.

विशेष तथ्य

1. इनके द्वारा रचित उपन्यास नायिका प्रधान उपन्यास माने जाते है ।
2. इनके उपन्यासों में यौन समस्याओं एवं स्वच्छंद प्रणायानुभूतियों का प्रमुखता से चित्रण किया गया है ।
3. इनके द्वारा रचित उपन्यास 'फ्रायड' के मनोविज्ञान से प्रभावित माने जाते हैं ।
4. मुक्तिबोध उपन्यास के लिए इनको 1966 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ।

इलाचंद्र जोशी– 1902–1982 ई.

1. घृणामयी
2. लज्जा
3. संन्यासी
4. पर्दे की रानी
5. प्रेत और छाया
6. निर्वासित
7. मुक्तिपथ
8. जिप्सी
9. सुबह के भूले
10. जहाज का पंछी
11. भूत का भविष्य

विशेष तथ्य

1. इनके द्वारा रचित उपन्यासों में भी अहंकार आत्महीनता, कामवासना इत्यादि बुराइयों का प्रमुखता से चित्रण किया गया है ।
2. इनके उपन्यास 'फ्रायड' मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित माने जाते है ।
3. 'संन्यासी' इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है ।
4. इनका मनोविश्लेषणवादी दृष्टिकोण सर्वप्रथम इसी उपन्यास में प्रकट हुआ है ।

अज्ञेय

1. शेखर : एक जीवनी
2. नदी के द्वीप
3. अपने–अपने अजनबी

विशेष तथ्य

1. शेखनः एक जीवनी इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है । यह हिन्दी साहित्य में 'फ्लैश बैक शैली' अथवा पूर्व दीप्ति शैली में रचित प्रथम उपन्यास माना जाता है ।
2. समीक्षकों ने इस उपन्यास को अतिशय आत्म केन्द्रित उपन्यास अथवा प्रकाशमान पुच्छल तारा नाम से पुकारा है ।